

रबिन्द्रनाथ ठाकुर

चित्राँकनः राजीव आइप

छोटा बड़ा



रोमाँचक टैगोर! भारत के सर्वप्रिय कवि द्वारा 5 कविताओं का संग्रह।

2

यह किताब .... की है



कथा के विषय में

कथा एक लाभ निरपेक्ष संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में हुई। शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में कथा का अनूठा योगदान है। कथा झुग्गी-झोपड़ी, बस्तियों और सरकारी स्कूलों में काम करती है ताकि हर बच्चा मज़े के लिए और अच्छी तरह पढ़ सके। महिलाओं और अध्यापिकाओं के द्वारा कथा बच्चों में उनकी प्रतिभा को उजागर करने में मदद करती है।

हमारी किताबें, वर्कशॉप और शिक्षण केन्द्र, कहानी के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ती हैं। कथा का अनुवाद के क्षेत्र में किया हुआ काम भारतीय प्रकाशन के इतिहास में अनूठा माना जाता है। इसे *इकोनोमिक टाइम्स* ने इन शब्दों में सराहा है, "A unique and special moment in Indian publishing history ..."

कथा की पुस्तकों को विश्व स्तर पर ख्याति मिली है। अंतर्राष्ट्रीय ज्युरी द्वारा प्रतिष्ठित एस्ट्रिड लिंडग्रिन पुरस्कार के लिए भी कथा का नामाँकन किया गया है। बाल साहित्य के क्षेत्र में यह पुरस्कार विश्व में सबसे बड़ा माना जाता है।

कथा नवीन एवं अनुभवी लेखकों, अनुवादकों और चित्रकारों के साथ काम करती है।

क्या आपको बच्चों के लिए लिखना, चित्र बनाना, अनुवाद करना अच्छा लगता है? तो अपनी प्रतिलिपि इस ईमेल आई डी पर भेजें: editors@katha.org, और बनें कथा परिवार का हिस्सा।

"[Katha] ... an educational jewel in India's crown."

— **Naoyuki Shinohara, Deputy Managing Director, International Monetary Fund**

"Katha stands as an exemplar for all the creative projects around the world that grapple with ordinary and dramatic misery in cities."

— **Charles Landry, The Art of City Making**

"Katha has a real soft corner for kids. Which is why it ... create[s] such gorgeous picture books for children."

— **Time Out**

"Katha's work is driven by the idea that children can bring change to their communities that is sustainable and real, just as the children do in [their books]."

— **Papertigers**



छोटा बड़ा

रबिन्द्रनाथ ठाकुर

चित्राँकनः राजीव आइप

भावानुवादः अनिरुद्ध मुखोपाध्याय

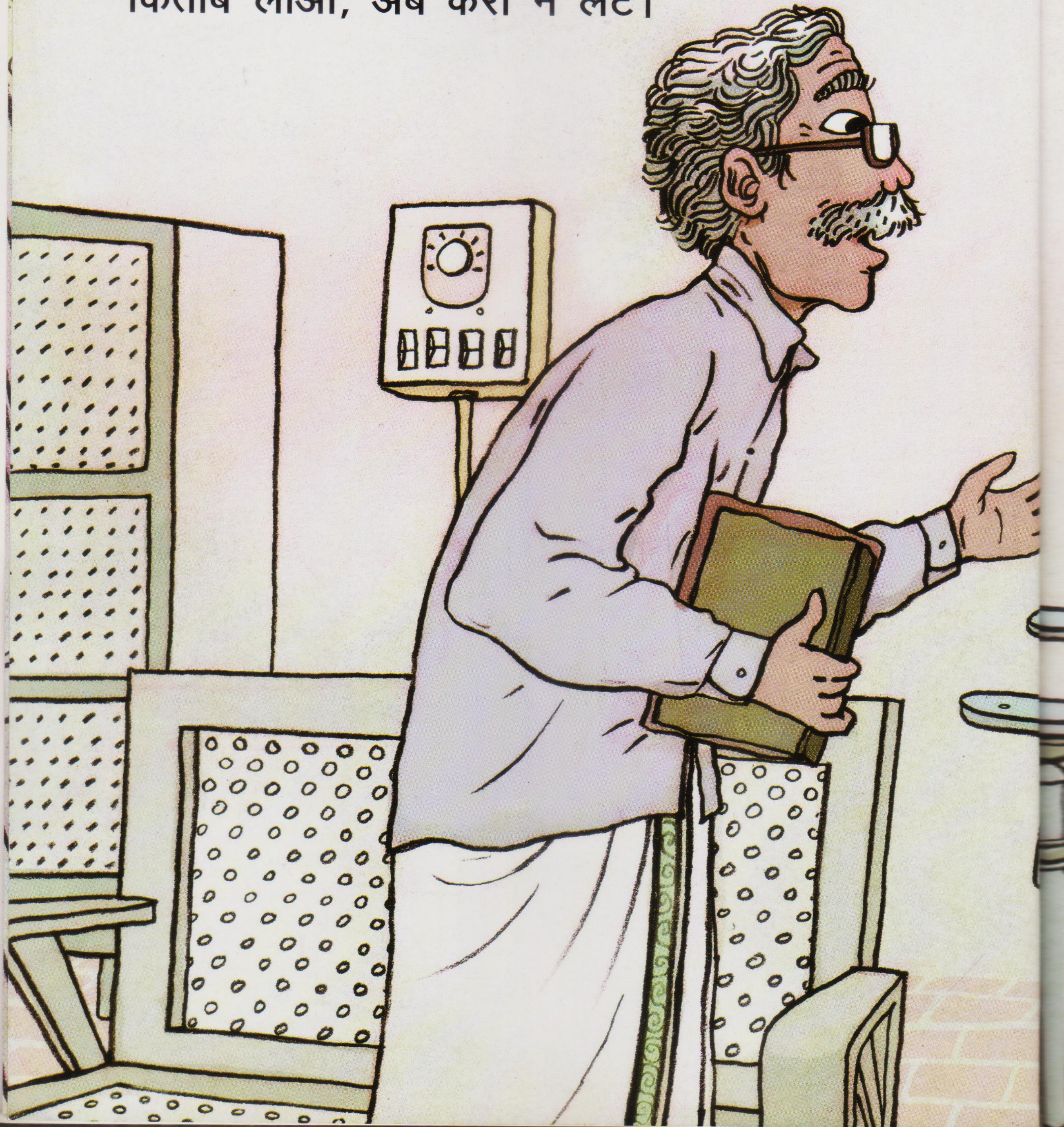
कथा



अभी तो मैं नहीं हूँ बड़ा, छोटा हूँ नन्हा-सा,
पर देखना एक दिन मैं भी हो जाऊँगा बड़ा,
बस बाबा जितना हो जाऊँ ज़रा!



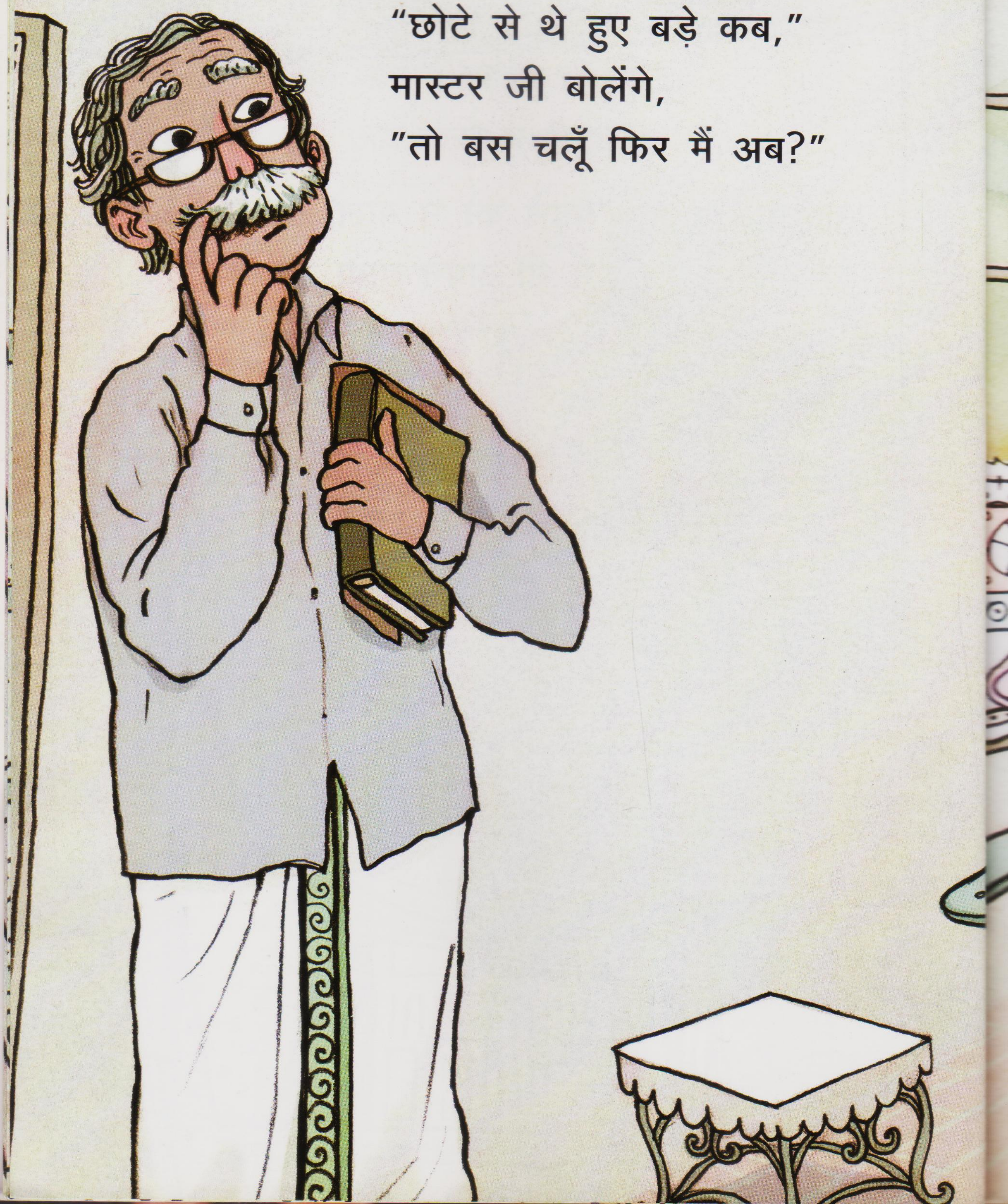
मास्टर जी जब आएँगे घर,
बोलेंगे, “लाओ अपनी स्लेट,
किताबें लाओ, अब करो न लेट।”



कहूँगा तब मैं, “पढ़ने को न बोलो इतना,
बड़ा हो गया हूँ मैं भी अपने बाबा जितना।”



“छोटे से थे हुए बड़े कब,”
मास्टर जी बोलेंगे,
”तो बस चलूँ फिर मैं अब?”





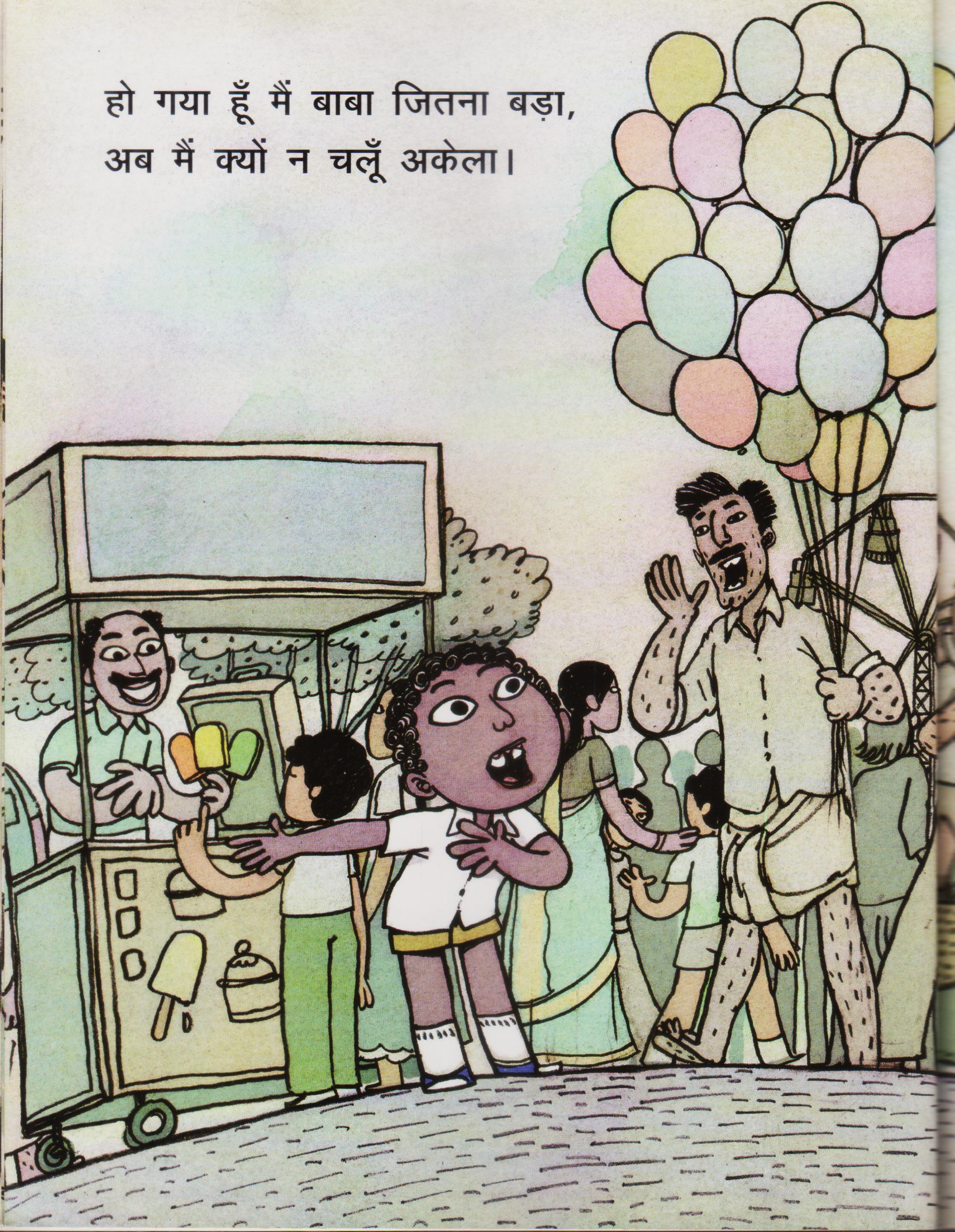
घर से निकलूँ मैं सज-धज,
मेले में है खूब जमघट,



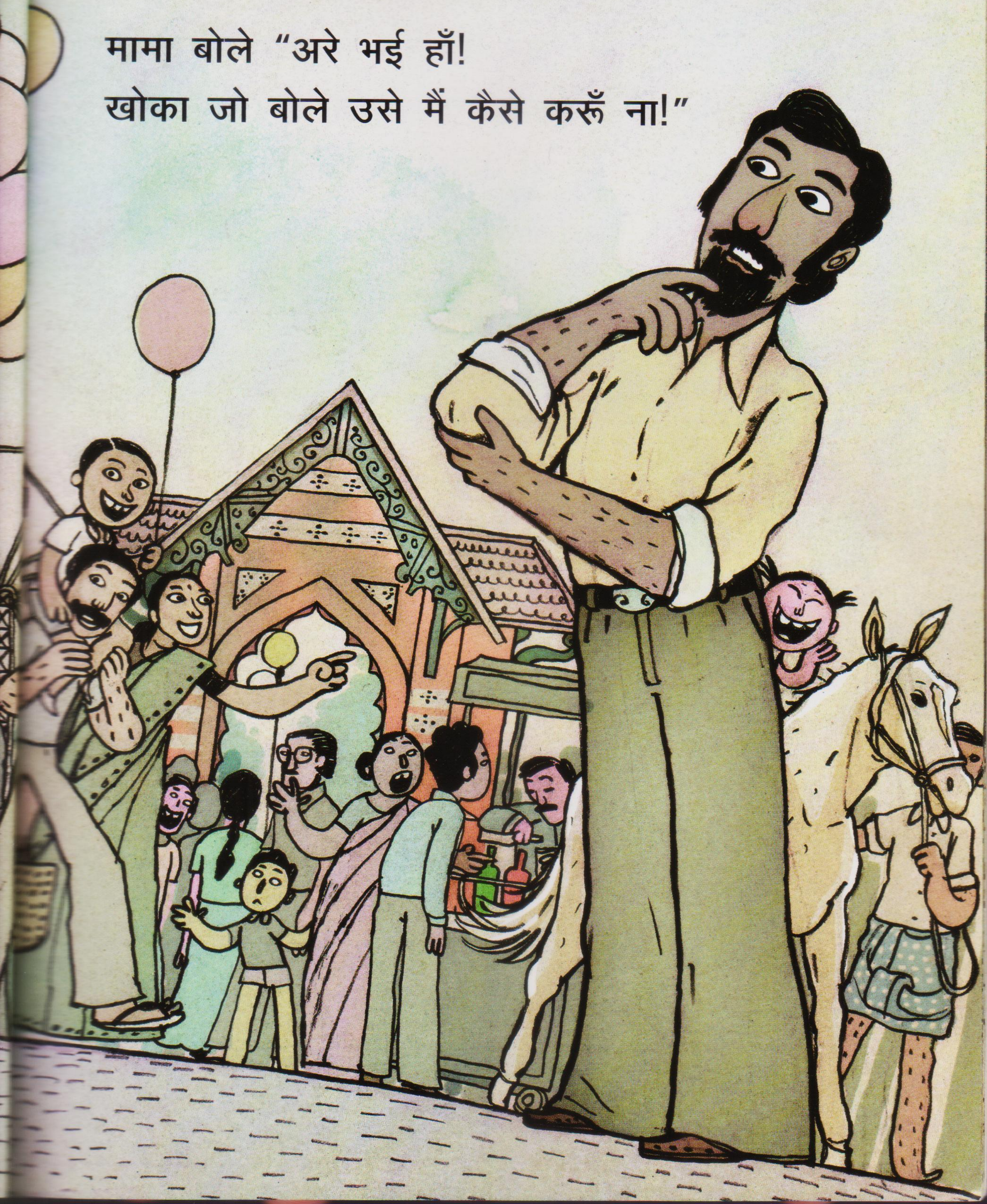
दौड़े-भागे आएँगे मामा,
हाथ बढ़ा बोलेंगे ओजाना।



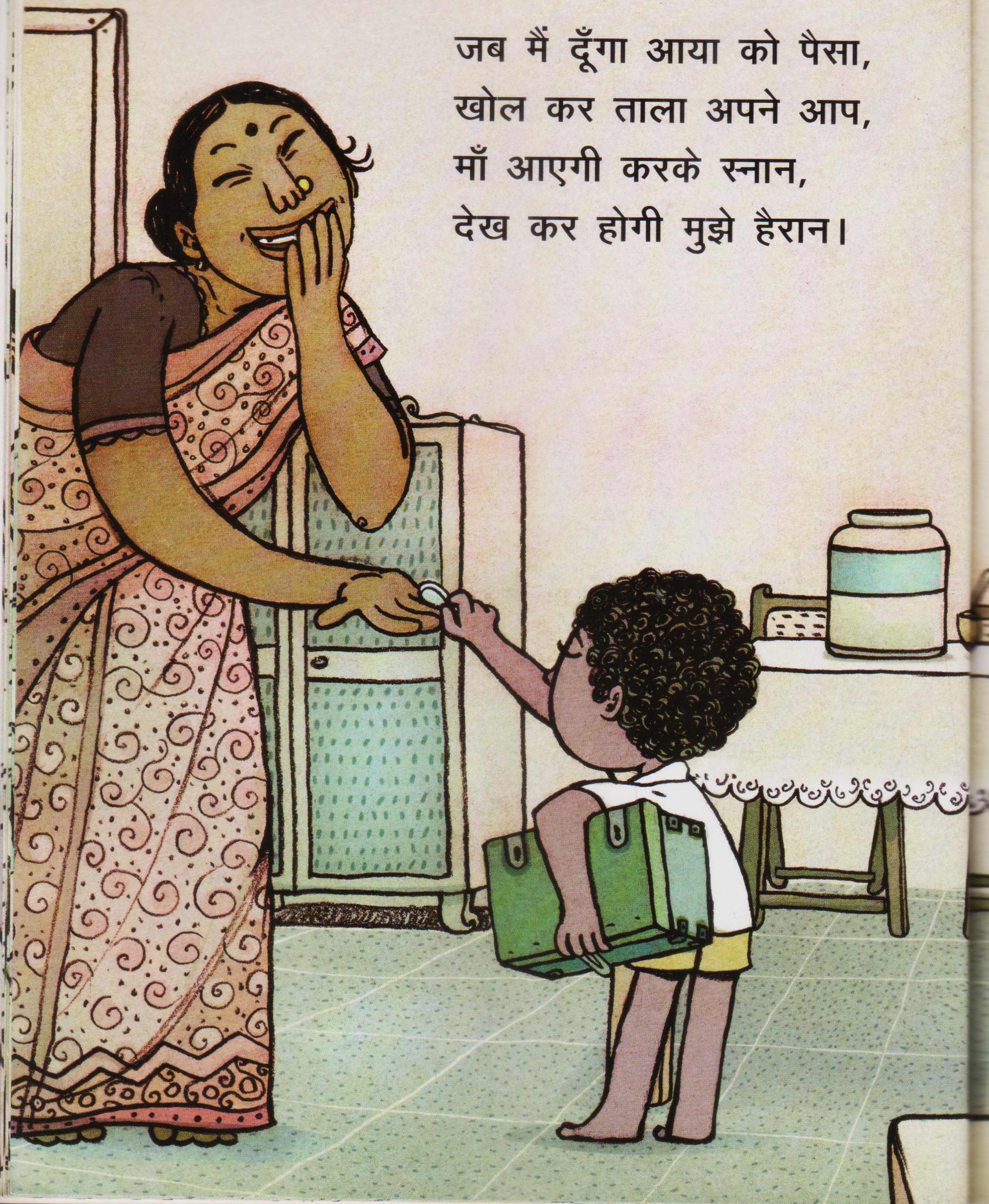
हो गया हूँ मैं बाबा जितना बड़ा,
अब मैं क्यों न चलूँ अकेला।

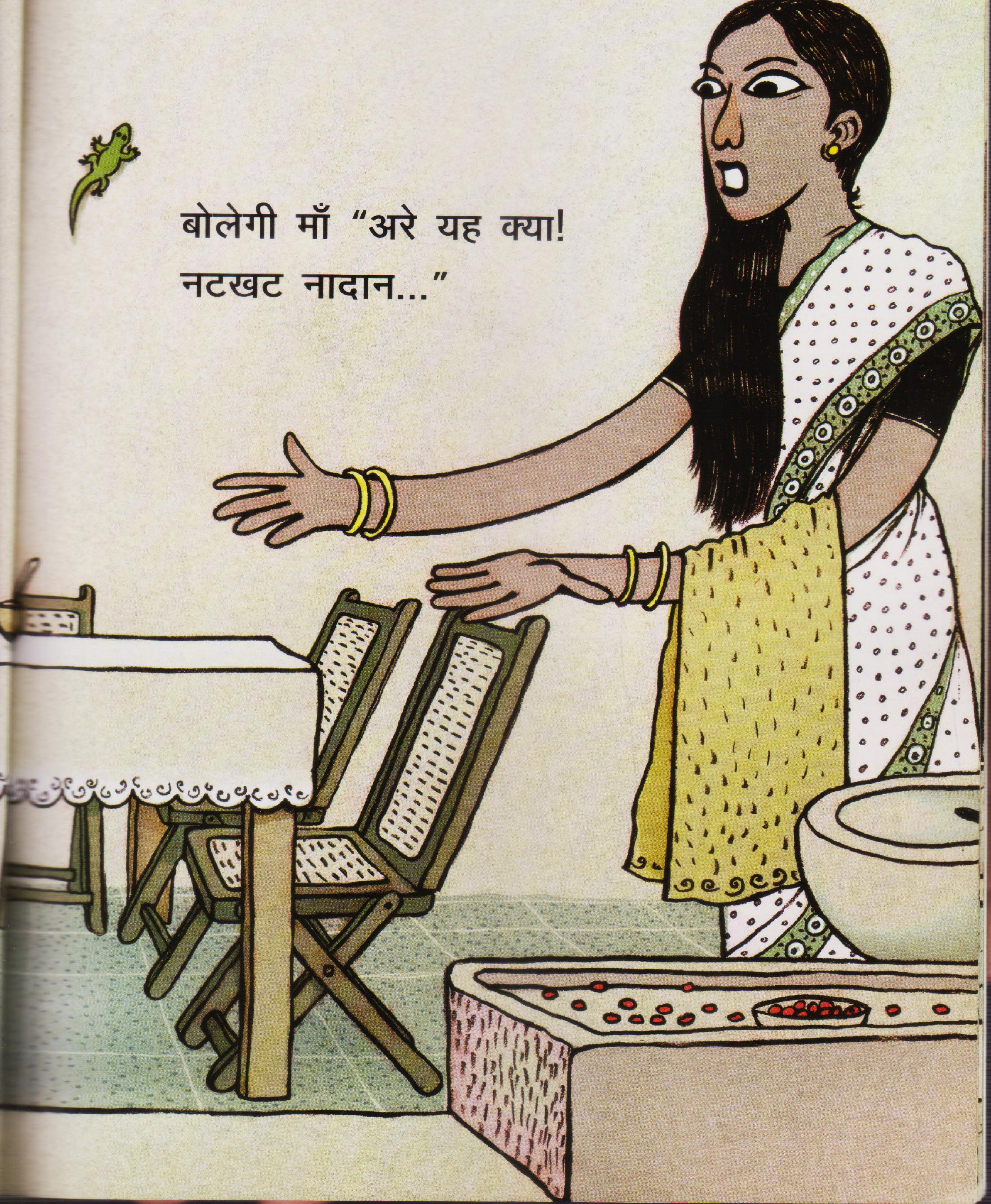


मामा बोले “अरे भई हाँ!
खोका जो बोले उसे मैं कैसे करूँ ना!”



जब मैं दूँगा आया को पैसा,
खोल कर ताला अपने आप,
माँ आएगी करके स्नान,
देख कर होगी मुझे हैरान।





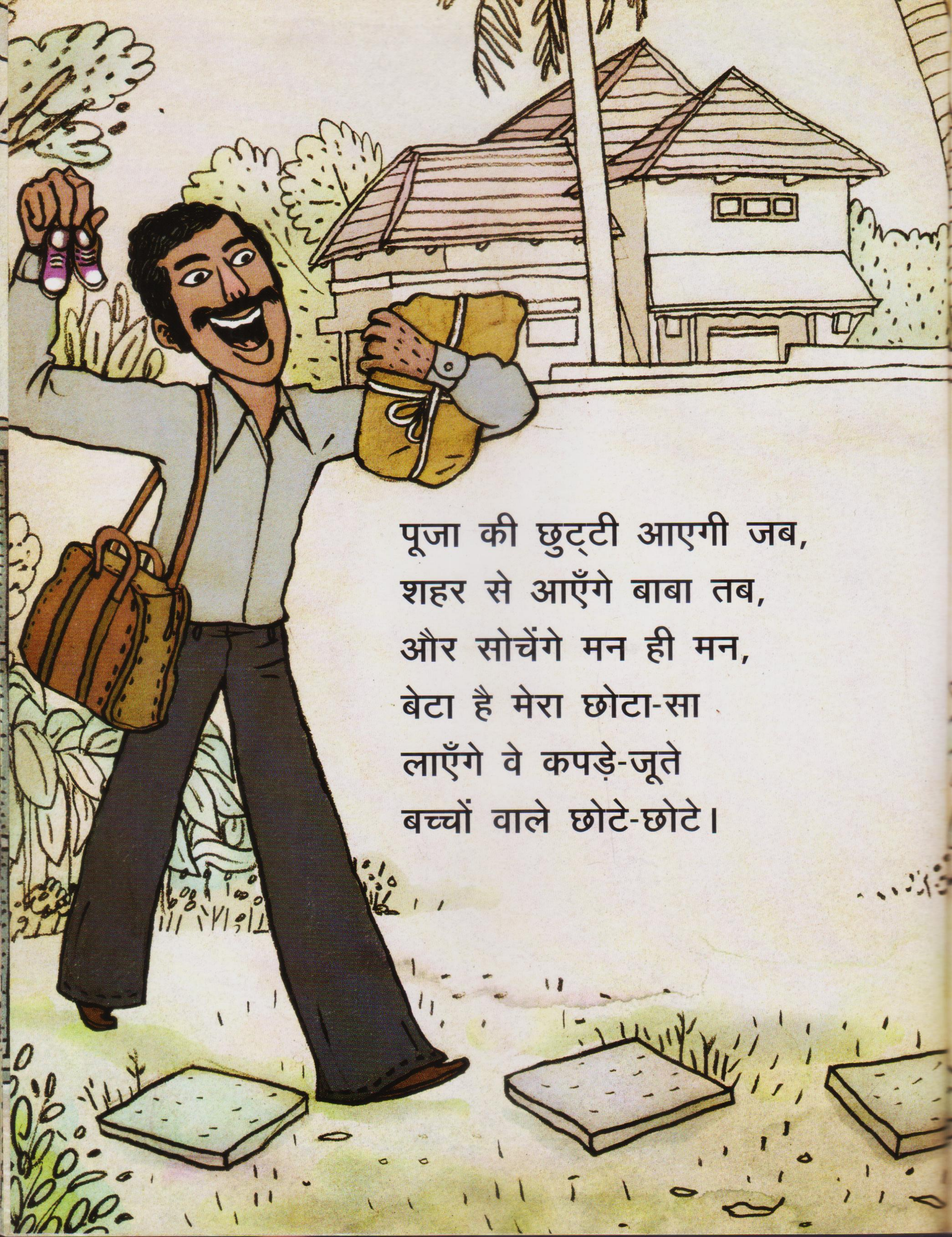
बोलेगी माँ "अरे यह क्या!
नटखट नादान..."

मैं बोलूँ "मैं बाँटू तनख़्वाह,
देखो मैं हो गया हूँ बाबा जितना बड़ा।"





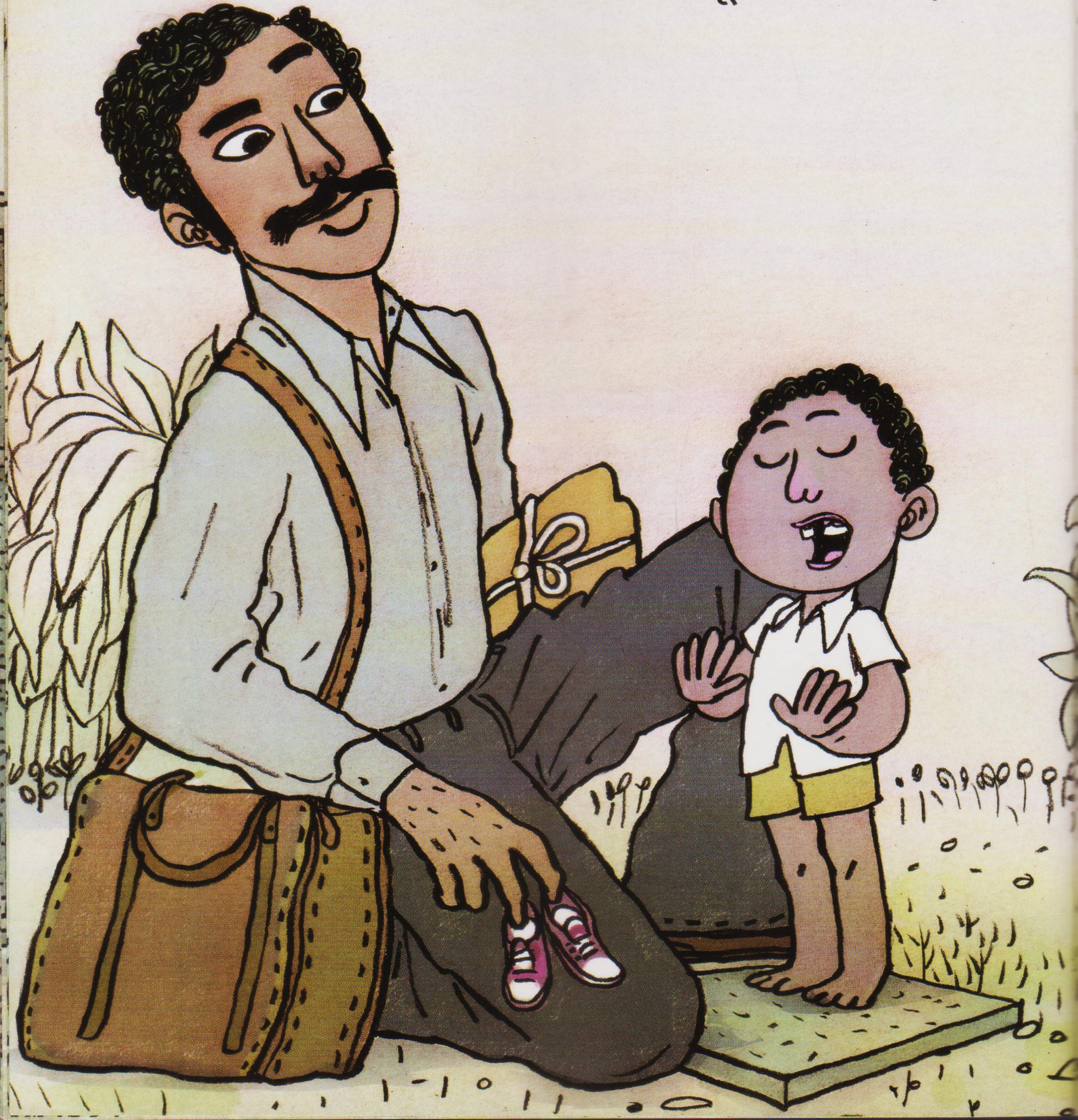
मन ही मन बोलेगी माँ,
मेरा बेटा हो गया बड़ा,
चाहे जिसको बाँटे पैसा।



पूजा की छुट्‌टी आएगी जब,
शहर से आएँगे बाबा तब,
और सोचेंगे मन ही मन,
बेटा है मेरा छोटा-सा
लाएँगे वे कपड़े-जूते
बच्चों वाले छोटे-छोटे।

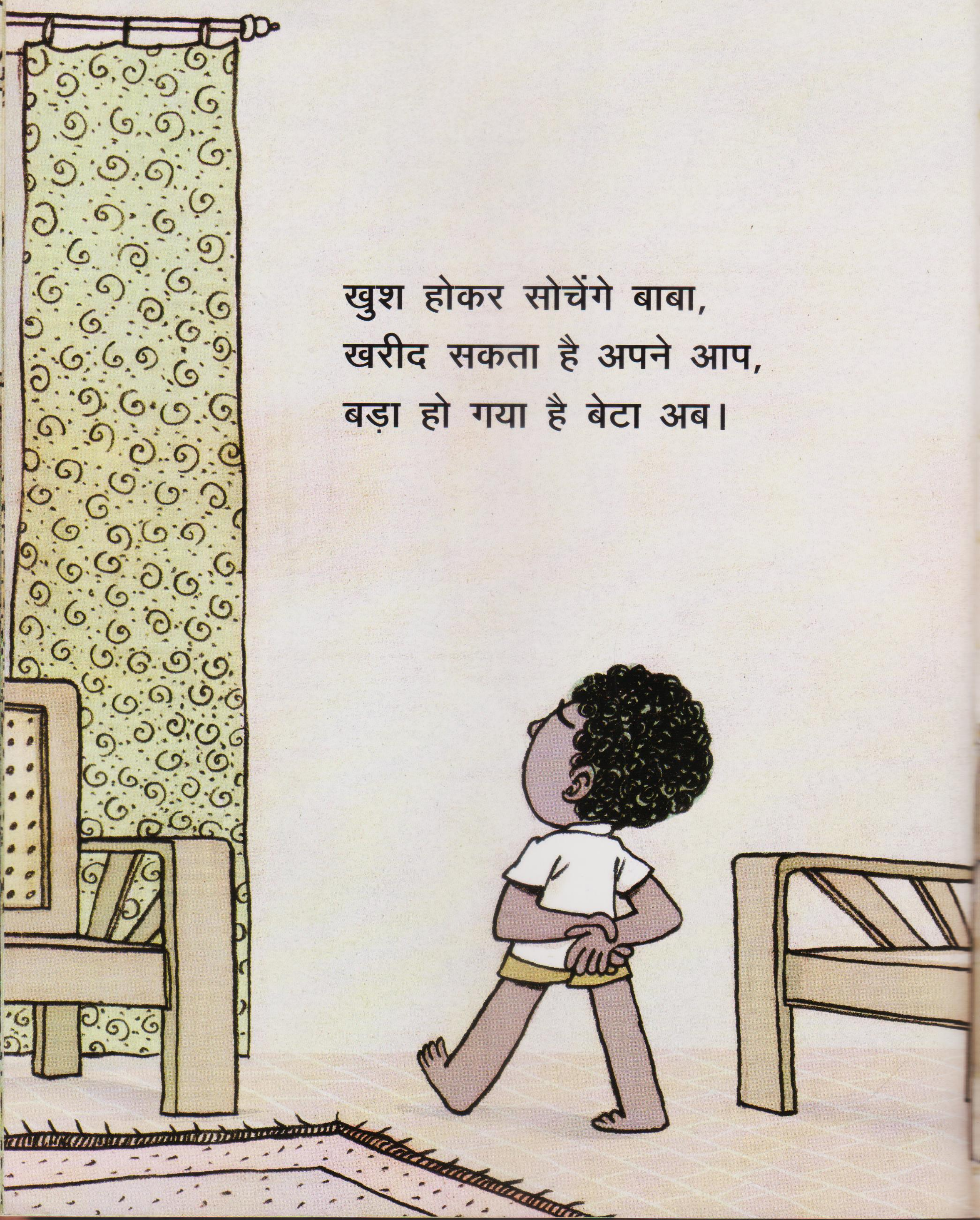


फिर बोलेंगे, "भई पहनो ज़रा!"
पर मैं तो हो गया हूँ आप-सा बड़ा!





खुश होकर सोचेंगे बाबा,
खरीद सकता है अपने आप,
बड़ा हो गया है बेटा अब।







मिलिए गुरुदेव से!

क्या आप जानते हैं भारत के राष्ट्रीय गान *जन, गण, मन* की रचना किस महान रचनाकार ने की? 150 साल पूर्व जन्मे इन सुप्रसिद्ध लेखक ने भारतीय साहित्य में मानो नई जान फूँक दी थी और आज भी इनकी रचनाएँ देशभर में पढ़ी और सराही जाती हैं। वे एक लेखक, कवि, नाटककार, संगीतकार और कथाकार भी थे।

जी हाँ! हम बात कर रहे हैं गुरुदेव रबिन्द्रनाथ ठाकुर की।

गुरुदेव का जन्म 7 मई सन् 1861, पश्चिम बंगाल में हुआ। उनके पिता श्री देबेन्द्रनाथ ठाकुर संस्कृत के महान विद्वान थे। गुरुदेव की प्राथमिक शिक्षा घर ही में हुई। जब सब बच्चे स्कूल जाते तो गुरुदेव अपने सपनों की छोटी–सी दुनिया में खो जाते! बरसात के दिनों में वे टकटकी बाँधे खड़े रहते इस आशा में कि शायद इतनी बरसात में मास्टर जी न आएँ। पर मास्टर जी कभी न चूकते। ठीक समय पर गली के मोड़ पर उनकी छतरी दिखाई पड़ती।

गुरुदेव छिप–छिपकर लिखा करते थे। अपनी पहली कविता उन्होंने आठ साल की उम्र में लिखी और सोलह साल की उम्र में उनका पहला कविता–संग्रह प्रकाशित हुआ। मन तो उनका संगीत में सराबोर था ही, गला भी बहुत मधुर था। बचपन से ही वे गीत लिखते, उनकी धुनें बाँधते और अत्यंत ललित कंठ में गाया करते।

बच्चों से उन्हें अपार प्रेम था। वह उनसे केवल प्यार ही नहीं करते, बल्कि उनका खूब आदर भी करते थे। बच्चों के लिए लिखी गई उनकी पहली कविता थी *वृष्टि पड़े टापुर–टुपुर*। बाद में उन्होंने बच्चों के लिए *शिशु, शिशु भोलानाथ* आदि अनेक कविता–पुस्तकें लिखीं।

बचपन से ही गुरुदेव को प्रकृति के बीच रहना खूब भाता था। वह हमेशा सोचा करते कि बच्चों को प्रकृति के बीच ही पढ़ना चाहिए और इसी विचारधारा के साथ उन्होंने शांतिनिकेतन विश्वविद्यालय की स्थापना की। इंदिरा गांधी, सत्यजीत राय, अमर्त्य सेन शांतिनिकेतन में ही पढ़े।

कविगुरु रबिन्द्रनाथ एकमात्र कवि हैं जिनकी दो रचनाएँ दो देशों का राष्ट्र गान बनीं। भारत का राष्ट्र गान, *जन, गण, मन* और बांग्लादेश का राष्ट्र गान *आमार सोनार बांग्ला* गुरुदेव की ही रचनाएँ हैं। महात्मा गांधी को महात्मा का विशेषण भी गुरुदेव ने ही दिया। अपने अंतिम दिनों मे गुरुदेव ने चित्र बनाना शुरू किए।

सन् 1913 में गुरुदेव को साहित्य में नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



राजीव आइप सर जे जे स्कूल ऑफ़ आर्ट्स से चित्रांकन में स्नातक प्राप्त कर, राष्ट्रीय डिज़ाईन संस्थान से फ़िल्म एनीमेशन पढ़ने गये। राजीव मुम्बई में रहते हैं, जहाँ वह टेलिविज़न के लिये एनीमेशन व चित्रालेख करते हैं, और मन–ही–मन चाहते हैं कि वह जीविका के लिये टैक्सी चलाएँ।

अनिरुद्ध मुखोपाध्याय एक लेखक, चित्रकार, अनुवादक और फ़ोटोग्राफ़र हैं। इनकी लिखी व अनुवादित रचनाएँ कईं बांग्ला पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं हैं। इन्हें शब्द, रंग और रेखाओं में सपने देखना व दिखाना खूब भाता है। अनिरुद्ध गुरुदेव के पक्के चेले हैं, यहाँ तक कि इनकी गुरुदेव जैसी ही लम्बी सफ़ेद दाढ़ी भी है।

कथा

पहला हिन्दी संस्करण 2011

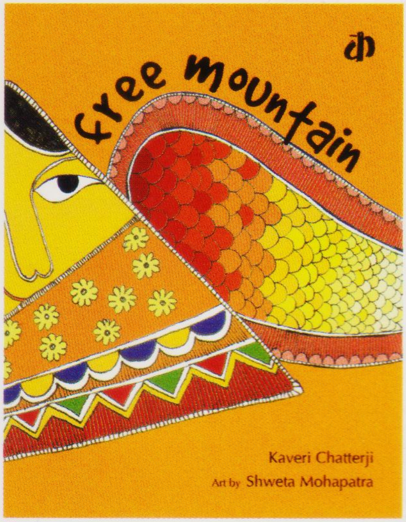
नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-89934-82-8

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा स्कूल दिल्ली के बस्ती, मोहल्लों और अरुणाचल प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में स्थित हैं।

ए–3 सर्वोदय एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नई दिल्ली–110017
दूरभाषः 4141 6600 . 4182 9998 . फ़ैक्सः 2651 4373
ई–मेलः marketing@katha.org
वेबसाइटः www.katha.org

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।
इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
दूसरा संस्करण 2013, तीसरा संस्करण 2015, चौथा संस्करण 2017, पाँचवाँ संस्करण 2017

कथा की अन्य काव्य-कथाएँ

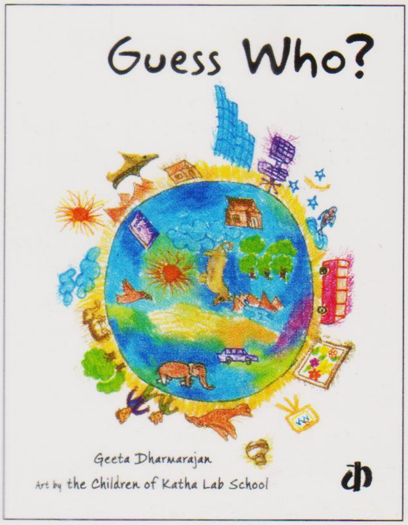


सुनो सुनो है बात पुरानी,
है ये तब की अजब कहानी
जब सब पहाड़ियाँ उड़ती थीं।
फ़िर एक दिन . . .

बस एक पहाड़ी

आगे क्या हुआ जानने के लिए पढ़िए खूबसूरत, जीती–जागती चित्रों से सजी ये अनोखी, मुस्कुराती, गुनगुनाती हुई कहानी, जिसे पढ़कर आप भी उड़ान भरना चाहोगे!

A simple tale rhythmically told in a lucid manner
— Saffron Tree



किसने बनाया?

सुर और लय से झूमता, लहराता यह गीत, जिसे हम सभी ने बचपन में गाया गुनगुनाया, आज फिर उसी गीत को कथा लाई है एक नए रंग, नए रूप में।
ख़ास नन्हे–मुन्नों के लिए।

The books like 'Guess Who?' provide the much needed speed-breakers in our lives…
— Literary Sojourn

recommended by
CBSE
NCERT

शैशव भावनाओं के रंगों से चित्रित कविवर रबिन्द्रनाथ ठाकुर की यह चंचल कविता, सभी उम्र के बच्चों के लिए।

पढ़िए और मज़ा लीजिए बचपन के रिमझिम फुव्वारों का!



बच्चों के लिए
कथा की किताब
ISBN 978-81-89934-82-8
9788189934828
www.katha.org
रु. 120/-